

# **PART-II**

## **Sub-Part-VI**

**प्राचीन भारत में स्थापत्य कला का विकास**

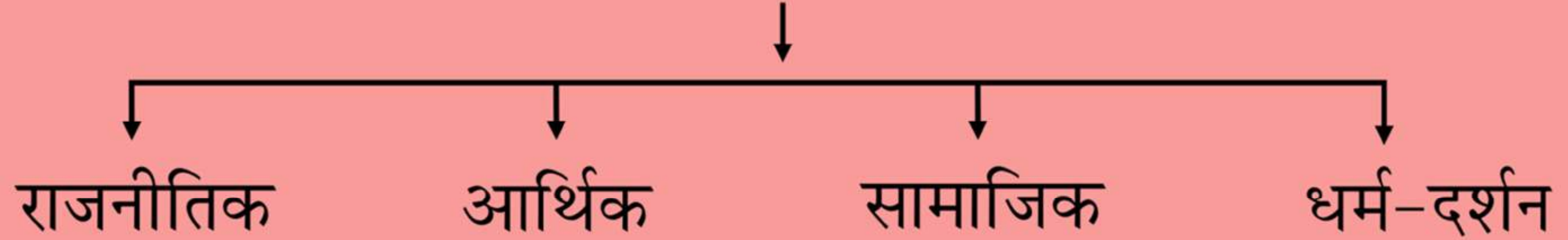
**(Development of Architecture in Ancient India)**

**By Manikant Singh**

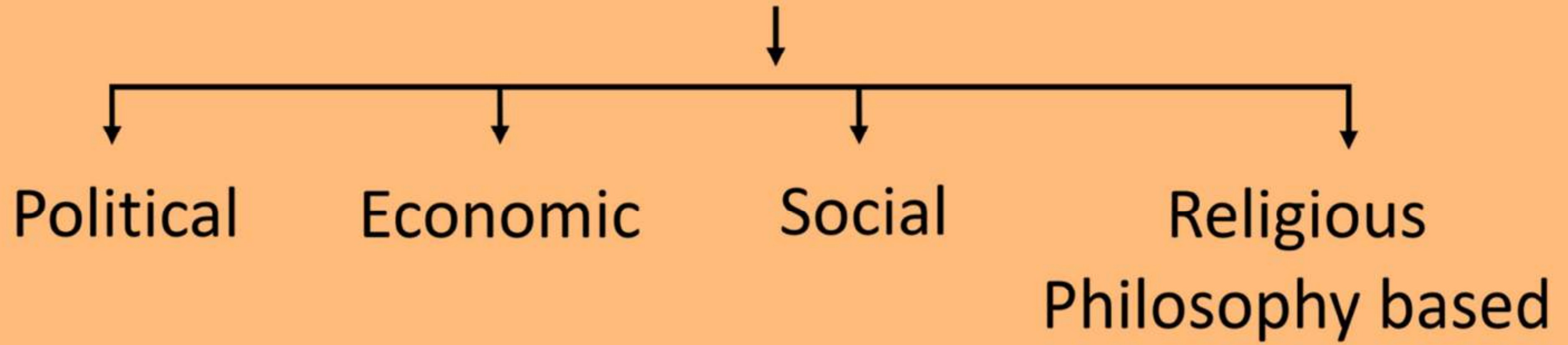
- प्राचीन भारत में कला का एक समृद्ध इतिहास रहा है। इसमें स्थापत्य अथवा वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत एवं नृत्य सभी शामिल हैं।
- अगर हम स्थापत्य कला के इतिहास पर अवलोकन करते हैं, तो हमें यह बात ज्ञात होती है कि इसके क्रमिक विकास का एक लम्बा इतिहास रहा है और इसे विविध कारकों से प्रेरणा मिली है।

- Art in ancient India boasts a rich and diverse history encompassing architecture, sculpture, painting, music, and dance.
- When examining the realm of architecture, we discover a fascinating evolution influenced by numerous factors.

## स्थापत्य कला



## Architecture





■ **राजनीतिक कारक:** स्थापत्य निर्माण निम्नलिखित रूप में राजनीतिक कारक से प्रेरित रहा है-

1. कई बार स्थापत्य के माध्यम से राजा अथवा शासक दूरवर्ती क्षेत्र तक अपनी उपस्थिति बनाए रखना चाहता था तथा उससे राज्य की सीमा भी निर्धारित होती थी।
2. मंदिरों के निर्माण के माध्यम से शासक अपने राजकीय गौरव को व्यक्त करने का भी प्रयास करते थे। उदाहरण के लिए, चोल शासक राजाराज प्रथम का बृहदेश्वर मंदिर तथा राजेन्द्र प्रथम का गंगईकोंडचोलपुरम का मंदिर उनकी राजनीतिक विजय का प्रतीक है।

➤ **Political Factors:** Architectural construction has often been influenced by political factors, as described below:

1. On numerous occasions, kings or rulers sought to establish their presence in remote areas through architecture, with the boundaries of their states being determined by these structures.
2. The construction of temples served as a means for rulers to display their royal pride. For instance, the Brihadisvara temple built by the Chola ruler Rajaraja-I and the Gangaikondacholapuram temple commissioned by Rajendra-I symbolize their political victories.



3. दूसरी सदी के पश्चात् विभिन्न राजवंशों ने कुलदेवता की अवधारणा विकसित कर ली थी। इनमें विष्णु, शिव, सूर्य एवं दुर्गा महत्वपूर्ण थीं। इन्हें सम्मानित करने के लिए भी मंदिरों का निर्माण किया जाता था।

3. Starting from the second century, various dynasties developed the concept of Kuladevata, with deities such as Vishnu, Shiva, Surya, and Durga holding significant importance. Temples were erected as a means of paying homage to these deities.

- **आर्थिक कारक:** आर्थिक संवृद्धि की स्थिति में कलात्मक गतिविधियों को विशेष प्रोत्साहन मिलता था। उदाहरण के लिए, मौर्योत्तर काल में जब रोमन व्यापार के कारण आर्थिक संवृद्धि आयी, तो बड़ी संख्या में चैत्यों, स्तूपों और विहारों का निर्माण किया गया। उसी प्रकार, संभवतः गुप्त काल में आर्थिक संवृद्धि बनी रही थी, इसलिए इस काल में बड़ी संख्या में मंदिरों का निर्माण हुआ।

➤ **Economic Factors:** During periods of economic growth, there was a notable emphasis on artistic endeavors. For instance, in the post-Mauryan era, the expansion of Roman trade stimulated economic prosperity, resulting in the construction of numerous chaityas, stupas, and viharas. Similarly, the Gupta period witnessed continued economic growth, which led to the construction of a significant number of temples.

- **सामाजिक कारक:** कई बार कोई सामाजिक समुदाय अपनी पहचान बनाने के लिए मंदिरों का निर्माण करता था। उसी प्रकार, अपने पूर्वजों को सम्मानित करने के लिए भी मंदिरों का निर्माण कराया जाता था। इसके अतिरिक्त, किसी प्रभावशाली व्यक्ति की मृत्यु पर भी स्मारक के रूप में मंदिर का निर्माण किया जाता था।
- **धर्म एवं दर्शन:** मंदिर निर्माण की गतिविधियाँ धर्म एवं दर्शन के साथ अभिन्न रूप में जुड़ी रही हैं। अलग-अलग धार्मिक पंथ के लोग अपने इष्ट देवता को सम्मान देने के लिए मंदिरों का निर्माण करते थे।

➤ **Social Factors:** Communities would often build temples as a means of establishing their identity. Additionally, temples were erected to pay homage to ancestors. Furthermore, temples were constructed as memorials to honor the passing of influential individuals.

➤ **Religion and Philosophy:** The construction of temples has always been closely intertwined with religion and philosophy. People from different religious sects would build temples to show reverence to their preferred deities.



- जहाँ तक दर्शन का सवाल है, तो स्तूप अथवा मंदिर अपने आप में सम्पूर्ण संसार को व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, स्तूप का अंड भाग मेरु पर्वत को व्यक्त करता है, जिसे संसार के केन्द्र में माना जाता है। उसके ऊपर निर्मित स्तम्भ आकाश एवं जमीन को विभाजित करता है।

- In terms of philosophy, the Stupa or temple symbolically encompasses the entire world within itself. For example, the dome-like structure of the stupa represents Mount Meru, believed to be situated at the center of the world. The pillar erected atop it symbolizes the division between the heavens and the earthly realm.

- उसी प्रकार, मंदिर का गर्भगृह मेरु पर्वत का प्रतीक माना जाता है, जो संसार के केन्द्र में अवस्थित है। फिर गर्भगृह के चारों ओर वृत्ताकार प्रदक्षिणा पथ समय की गति को दर्शाता है। मंदिर का ऊँचा शिखर इस संसार का प्रतीक है तथा शिखर के ऊपर निर्मित मूर्तियाँ विभिन्न आकाशचारी प्राणियों का निवास स्थल होती हैं।

- Similarly, the sanctum-sanctorum of the temple is believed to symbolize Mount Meru, which is located at the center of the world. The circular path around the sanctum, known as the circumambulatory path, signifies the passage of time. Moreover, the towering sikhara(spire) of the temple represents the earthly realm, while the idols placed atop the sikhara(spire) serve as abodes for various celestial beings.

## ❑ मौर्यकालीन स्थापत्य

- इसका गहरा संबंध अशोक महान से रहा है तथा इसकी दो प्रमुख विशेषताएं रही हैं। प्रथम, यह बौद्ध विचारों से प्रेरित रहा तथा दूसरा, यह राजकीय संरक्षण में पला एवं बढ़ा। इसके निम्नलिखित रूप प्रकट होते हैं-

1. **अशोक के स्तम्भ-** अशोक के स्तम्भ चुनार पत्थर से निर्मित हैं। ये एकाश्म ( **Monolithic** ) पत्थर से ही निर्मित हैं अर्थात् एक ही पत्थर से पूरे स्तम्भ का निर्माण किया गया है। इस स्तम्भ के दो भाग हैं, प्रथम भाग है यष्टि ( **Pillar** ) और दूसरा भाग है गावदुम लाट ( **head** )।

## ❑ Mauryan Architecture

- It has a profound connection with Ashoka the Great and possesses two main characteristics. Firstly, it was inspired by Buddhist concepts, and secondly, it flourished under state patronage. The various forms associated with it are as follows:

1. **Pillars of Ashoka:** The Pillars of Ashoka are crafted from Chunar (lime) stone and are monolithic, meaning each pillar is made from a single stone. These pillars consist of two parts: the Yashti (Pillar) and the Gavdum Lat (Capital or Head).



- यष्टि के अंत में अवांगमुखी कमल ( Inverted Lotus ) है जिसके ऊपर एक चौकी निर्मित है, कहीं-कहीं चौकी पर हंस पक्षियाँ बनायी गयी हैं। सारनाथ की चौकी पर चक्र अंकित है। फिर चौकी के ऊपर पशु आकृतियाँ बनायी जाती थीं। सामान्यतः पशुओं के रूप में हाथी, घोड़े, सांड एवं शेर ( सिंह ) का प्रतिनिधित्व मिलता है। किंतु सारनाथ में चार शेरों को एक-दूसरे के साथ पीठ टिकाए हुए बैठा दिखाया गया है।
- At the top of the Yashti, there is an inverted lotus upon which a chowki (Base) is constructed. In some instances, rows of swans are depicted on the base. The Ashoka Chakra is inscribed on the abacus at Sarnath. Animal figures were also carved on the pillar, typically representing elephants, horses, bulls, and lions. However, at Sarnath, four lions are depicted sitting back-to-back.

# Ashoka Pillar





# Ashoka Pillar





2. **स्तूप-** अशोक कालीन स्थापत्य का एक उदाहरण है- स्तूप निर्माण। उसके काल से जुड़ा हुआ स्तूप **साँची का महीन स्तूप** है जो स्तूप निर्माण की आरंभिक अवस्था को दर्शाता है। सामान्यतः स्तूप एक अर्द्धवृत्ताकार संरचना होती थी। आरंभिक स्तूप ईंटों से निर्मित किया गया था। उसका ऊपरी भाग समतल होता था, जिसमें हर्मिक (चैम्बर) का निर्माण किया जाता था। उसमें बुद्ध अथवा किसी महत्वपूर्ण संत के शरीर का अवशेष रखा जाता था। हर्मिक के ऊपर एक लकड़ी का स्तम्भ निर्मित किया जाता था, जो समय के साथ नष्ट हो गया। स्तूप को एक छोटी-सी चहारदीवारी से भी घेरा जाता था।

2. **Stupa-** An example of Ashoka's architectural legacy is the construction of stupas. One notable stupa from his era is the exquisite stupa at Sanchi, which exemplifies the early stage of stupa construction. Generally, a stupa was a semi-circular structure. Initially, the stupa was built using bricks, with its upper part being flat and featuring a chamber called the harmika. This chamber served as a burial place for the relics of Buddha or other revered saints. A wooden pillar used to be erected atop the harmika, although it has since deteriorated over time. Additionally, the stupa was enclosed by a small boundary wall.



# Ashoka Stupa





**3. गुफा वास्तुकला-** अशोक के काल में ही पहाड़ों को काटकर गुफाओं का निर्माण आरम्भ हुआ। आरम्भिक गुफाएं गया में बराबर की पहाड़ी में निर्मित की गयी थीं तथा इन्हें आजीवकों को दान में दिया गया। उसी प्रकार, उसके पौत्र दशरथ ने नागार्जुनी की पहाड़ी में कुछ गुफाएँ निर्मित कर आजीवकों को दान में दीं। आरम्भिक गुफाएं सादी एवं सामान्य प्रकार की थीं। किंतु धीरे-धीरे ये गुफाएं जटिल होती गयीं।

**3. Cave Architecture-** The construction of caves began with the carving of mountains during Ashoka's time. The earliest caves were built in the Barabar Hills in Gaya and were generously donated to the Ajivikas. Similarly, Ashoka's grandson, Dasaratha, constructed some caves in the Nagarjuna Hills, which were also bestowed upon the Ajivikas. Initially, these caves were of a simple and conventional design, but over time, they evolved into more intricate structures.



- आरम्भिक गुफाओं का निर्माण बहुत ही सादा था। गुफा के मुख को आयताकार काटा जाता था तथा उसमें रहने के लिए निवास स्थल बनाया जाता था। उस निवास स्थल की छत को तथा उसके आयताकार दरवाजे पर काली लेप चढ़ाई जाती थी। अशोक के द्वारा निर्मित यही गुफा वास्तुकला आगे विकसित होती हुई बौद्ध मंदिर तथा फिर पल्लव शासकों के अधीन हिंदू मंदिरों में विकसित हुई।

- The construction of the early caves followed a straightforward approach. The cave facades were cut in rectangular shapes, creating living spaces within. The roofs of these dwellings and their rectangular entrances were coated with black paste. This architectural style introduced by Ashoka later progressed into Buddhist temples and eventually transformed into Hindu temples under the rule of the Pallava dynasty.



# Barabar : Lomas rishi Cave





# Barabar : Lomas rishi Cave





## ❑ मौर्योत्तरकालीन स्थापत्य

- इस काल में भी कला की मूल उत्प्रेरणा बौद्ध धर्म से ही मिली। किंतु इस काल में निश्चय ही कला के सामाजिक आधार का विस्तार हुआ था। वस्तुतः जैसाकि हमने पीछे देखा कि मौर्य कला राज्य संरक्षण में ही पली एवं बढ़ी थी, किंतु इस काल में शासक वर्ग के अतिरिक्त कुलीन, व्यापारी, भिक्षु-भिक्षुणियाँ सभी ने कला को संरक्षण दिया। इस काल में स्थापत्य कला के निम्नलिखित रूप देखने को मिलते हैं-

## ❑ Post Mauryan Architecture

- During this period, Buddhism remained the primary source of artistic inspiration. However, the social support for art expanded significantly. In contrast to the Mauryan era, where art thrived exclusively under state patronage, during this period, art gained support from not only the ruling class but also from nobles, merchants, monks, and Bhikshuni (female monks).

■ **स्तूप-** मौर्योत्तर काल में स्तूप कला का बेहतर विकास देखने को मिलता है। इसमें निम्नलिखित कलात्मक विशेषताएँ थीं-

1. यह अर्द्धवृत्ताकार आकृति थी। इसका निर्माण ईंटों से किया जाता था, परन्तु ऊपर से पत्थर बिछाया जाता था।
2. इसका ऊपरी भाग समतल होता था, जिसमें एक चैम्बर का निर्माण किया जाता था। इसे हर्मिक कहा जाता था। इसमें किसी पवित्र व्यक्ति का अवशेष रखा जाता था।

➤ **Stupa-** Various forms of architecture emerged, with the Stupa experiencing notable artistic development in the post-Mauryan period. The Stupa displayed the following artistic features, as outlined -

1. It possessed a semicircular shape and was primarily constructed using bricks, while stones were used for the upper section.
2. The upper part of the Stupa was flat and contained a chamber called the Harmika, where the relics of revered individuals were enshrined.

3. इसके ऊपर प्रस्तर का एक स्तम्भ बनाया जाता था, जिस पर तीन छतरियाँ बनाई जाती थीं जो करुणा, सहनशीलता तथा उदारता का प्रतीक होती थीं।
4. इसके चारों ओर वेदिका का निर्माण किया जाता था, जो प्रदक्षिणापथ का भी कार्य करता था।
5. इसे चाहर दीवारी से घेरा जाता था जिसमें सभी ओर से भव्य प्रवेश द्वार का निर्माण किया जाता था। इस प्रवेश द्वार पर मानव एवं पशु की मूर्तियाँ बनाई जाती थीं।

3. Atop the Harmika, a stone pillar was erected, adorned with three umbrellas symbolizing compassion, tolerance, and generosity.
4. A Vedika, or railing, surrounded the Stupa, serving as a path for circumambulation.
5. The Stupa was enclosed by a four-sided wall, featuring magnificent entrances on each side, adorned with idols depicting humans and animals.



# Sanchi





# Sanchi





- स्तूप के विषय में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि यह बौद्ध पंथ के लोकप्रिय स्वरूप को प्रकट करता है। वस्तुतः स्तूप कला में लोक कथानक अथवा लोक जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं को आत्मसात करते हुए उन्हें बौद्ध आदर्श में परिवर्तित कर दिया गया।
- अगर एक तरह से देखा जाए, तो स्तूप की सम्पूर्ण संकल्पना ही जनजातीय तत्वों से ली गई है। किसी जनजातीय मुखिया की मृत्यु के पश्चात् उसकी समाधि पर एक टीला बनाया जाता था, बौद्ध पंथ ने उसे स्तूप के रूप में अपना लिया। स्तूप एक अर्द्धवृत्ताकार स्थापत्य के रूप में निर्मित किया गया, फिर उसके केन्द्रीय कक्ष में मृतक व्यक्ति का अवशेष रखा जाना भी समाधि का प्रतीकात्मक अर्थ बताता है।
- An intriguing aspect of the Stupa is its representation of popular Buddhist traditions. Folk stories and incidents related to everyday life were assimilated into Stupa art, transforming them into Buddhist ideals.
- In essence, the concept of the Stupa draws from tribal elements. It originated from the practice of constructing mounds over the tombs of tribal leaders. The Buddhist sect adopted this practice, shaping it into the Stupa. The semi-circular architectural form of the Stupa, along with the placement of the remains of the deceased in its central chamber, symbolizes the significance of a mausoleum.

- स्तूप के प्रवेश द्वार पर जो पशु एवं मानव मूर्तियाँ निर्मित की जाती थीं, उनका भी संबंध लोक जीवन और लोक कथानकों से रहा था। उदाहरण के लिए, पशु के रूप में हाथी, घोड़े, बाघ, बंदर आदि का संबंध लोक कथानकों से था, परन्तु बौद्ध पंथ ने उन्हें अपने आदर्श रूप में समाहित कर लिया। हाथी महात्मा बुद्ध की माता के गर्भ में आने का प्रतीक, सांड उनके यौवन का प्रतीक, घोड़ा गृहत्याग का प्रतीक बन गया।

- The animal and human idols found at the entrances of the Stupa also have connections to folk life and stories. For instance, the elephant, horse, tiger, monkey, and others are associated with folk tales. However, these forms were embraced by the Buddhist tradition, attributing them with idealized symbolism. The elephant became a symbol of the Buddha's entry into his mother's womb, the bull represented his youth, and the horse symbolized renunciation.



- चूँकि लोक देवता के रूप में यक्ष-यक्षिणी को इस काल में काफी महत्व प्राप्त था, अतः स्तूप के प्रवेश द्वार पर उनकी भी मूर्तियाँ बनाई गईं और उन्हें भी बौद्ध आदर्शों में समाहित किया गया। उसी प्रकार, देवता के रूप में नाग-नागिन को भी महत्व प्राप्त था, अतः इन मूर्तियों में नाग-नागिन को भी शामिल किया गया। एक दिलचस्प तथ्य यह है कि लोक कथानक में ‘शालभंजिका’ काफी प्रसिद्ध थी। यह समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक मानी जाती थी।
- Given the prominence of Yaksha-Yakshini as folk deities during this period, their idols were also incorporated at the entrances of the Stupa, assimilated into Buddhist ideals. Similarly, serpents(Nag-Nagin) held significance as deities, and their idols were included as well. Notably, the ‘Shalabhanjika’ enjoyed popularity in folk stories, symbolizing prosperity and good fortune.

- इसके विषय में प्रचलित था कि अगर यह पेड़ के पत्ते छूती, तो वे फूल बन जाते। अगर हम साँची के स्तूप के प्रवेश द्वार पर देखते हैं, तो वहाँ हमें पेड़ की शाखा से लटकी हुई शालभंजिका की मूर्ति दिखलाई पड़ती है।
- इस प्रकार, हम देखते हैं कि बौद्ध पंथ ने अपनी लोकप्रियता बनाए रखने के लिए लोक प्रचलित कथानकों को बौद्ध आदर्शों में परिवर्तित किया और फिर उसे स्तूप कला में शामिल कर लिया।
- It was believed that merely touching the leaves of the tree she stood beside would transform them into flowers. At the entrance of the Stupa in Sanchi, one can observe an idol of Shalabhanjika hanging from a tree branch.
- Hence, it is evident that the Buddhist sect transformed popular stories into Buddhist ideals to uphold its popularity, incorporating them into Stupa art.



# शालभंजिका





**प्रश्न:** प्रारंभिक बौद्ध स्तूप-कला, लोक वर्ण्य-विषयों एवं कथानकों को चित्रित करते हुए बौद्ध आदर्शों की सफलतापूर्वक व्याख्या करती है। विशदीकरण कीजिए। ( UPSC-2016 )

**उत्तर-** बौद्ध पंथ का एक सबल तत्व रहा जनसामान्य के साथ इसका जुड़ाव तथा जनसामान्य के द्वारा इसकी व्यापक स्वीकृति। एक तरफ जहाँ इसने लोक भाषा पालि को ग्रहण किया था, वहीं दूसरी तरफ इसने लोक प्रचलित सांस्कृतिक प्रतीकों को भी अपनाया।

**Question:** “Early Buddhist Stupa-Art while depicting folk motifs and narratives successfully expounds Buddhist ideals.”  
Elucidate. [UPSC-2016]

**Answer:** A significant aspect of Buddhism is their connection with the common people and their widespread acceptance among them. On one hand, Buddhism adopted the folk language Pali, while on the other hand, it embraced popular cultural symbols.

वस्तुतः बौद्ध धर्म की विख्यात स्थापत्य शैली, स्तूप कला, लोक जीवन से ली गई थी तथा यह क्रमिक रूप में विकसित हुई थी। जैसा कि हम जानते हैं जनजातीय पद्धति में मुखिया अथवा सरदार की मृत्यु के बाद मृतक संस्कार के पश्चात् एक छोटे से टीले बनाने की परम्परा प्रचलित थी। बौद्ध पंथ ने इस परम्परा को अपना लिया। उसी प्रकार जनसामान्य के बीच गैर- आर्य पंथों का गहरा प्रभाव था। इनमें एक था यक्ष एवं यक्षिणी की पूजा। मौर्यकाल में भी लोक कला के रूप में यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमाएं बनाई जाती थीं। आगे बौद्ध पंथ ने स्तूप कला के साथ इसे भी जोड़ दिया।

Stupa art, the renowned architectural style of Buddhism, derived inspiration from folk life and evolved gradually. In tribal societies, it was customary to create small mounds after the cremation of a chief or chieftain. The Buddhist sect adopted this tradition, incorporating it into their practices. Additionally, non-Aryan sects had a profound influence on the common people. One such example was the worship of Yaksha and Yakshini. Even during the Mauryan period, idols of Yaksha-Yakshini were created in the style of folk art. These elements were later incorporated into Stupa art by the Buddhist cult.



उसी प्रकार जनसामान्य के बीच नागपूजा, पशुपूजा, वृक्षपूजा आदि प्रचलित थे। स्तूप कला में धीरे-धीरे इन सभी को आत्मसात कर लिया गया।

फिर जैसा कि हम देखते हैं मौर्यकाल में स्तूप कला राजकीय संरक्षण में पली एवं बढ़ी थी, किंतु ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में कला का सामाजिक आधार व्यापक हुआ। अशोक ने अपने धर्म के प्रसार के क्रम में लोक उत्सव, समाज, समारोह एवं कुछ अन्य कार्यक्रमों को हतोत्साहित किया था। किंतु मौर्य काल के पश्चात् एक बार फिर इन तत्वों का प्रभाव बढ़ता गया तथा इन्होंने समकालीन धर्म एवं कला दोनों पर अपना प्रभाव छोड़ा।

Similarly, the worship of snakes, animals, and trees was prevalent among the common people, and these aspects gradually found their place in Stupa art.

During the Mauryan period, Stupa art thrived under state patronage. However, in the early centuries AD, its social base expanded widely. Ashoka, in his efforts to propagate Buddhism, discouraged certain folk festivals, social ceremonies, and other practices. However, after the decline of the Mauryan empire, the influence of these elements resurfaced and left their impact on both contemporary religion and art.

स्तूप अर्द्धवृत्ताकार गुम्बद होता था जो जनजातीय लोगों के मृतक संस्कार टीले की तरह था। उसके केंद्र में हर्मिक होती थी जिसमें किसी मृतक व्यक्ति के अवशेष को रखा जाता था। इसके साथ वेदिका एवं प्रवेश द्वार भी निर्मित किया गया। वेदिका एवं प्रवेश द्वार पर विभिन्न प्रकार के पशुओं, नाग एवं लोक जीवन से जुड़ी हुई अनेक मूर्तियां बनाई जाती थीं। बौद्ध पंथ ने धीरे-धीरे इन्हें धर्म के साथ आत्मसात कर लिया।

इस प्रकार हम देखते हैं बौद्ध स्थापत्य की प्रमुख शैली लोक जीवन से जुड़ी हुई थी तथा लोक प्रचलित तथ्यों को लेकर क्रमिक रूप में विकसित हुई।

The Stupa itself was a semi-circular dome resembling the funeral mounds of tribal communities. The harmika, located at its center, housed the remains of the deceased. Surrounding the Stupa, a Vedika(altar) and entrance gates were constructed. Numerous sculptures depicting various animals, snakes, and aspects of folk life adorned the Vedika and entrances. Over time, the Buddhist sect assimilated these elements into their religious practices.

Thus, it is evident that the primary style of Buddhist architecture was intricately linked with folk life and gradually developed by incorporating popular elements.



- **चैत्य-** चैत्य बौद्धों का पूजा गृह था। अधिकांश चैत्य पहाड़ों को काटकर निर्मित किये जाते तथा ये मौर्यकालीन गुफा वास्तुकला के विकसित रूप थे। सामान्यतः चैत्य आयताकार होता था तथा उसका अंतिम किनारा अर्द्धवृत्ताकार होता था। उसके केंद्र में एक स्तूप का भी निर्माण किया जाता था। इसका उद्देश्य उपासना था। फिर स्तूप के साथ मानव मूर्ति भी जोड़ी जाने लगी तथा स्तूप के छत को घोड़े की नाल के आकार में काट दिया जाता था, ताकि उससे होकर रोशनी स्तूप के ऊपर पड़े। इसे चैत्य खिड़की कहा जाता था। यह अपने आप में एक महत्वपूर्ण तकनीकी विकास था।

➤ **The Chaitya-** The Chaitya was a place of worship for Buddhists and was predominantly constructed by excavating mountains. These structures were evolved forms of Mauryan cave architecture. Typically, the Chaitya had a rectangular shape with a semicircular rear end. A stupa was placed at its center, serving as the focal point for worship. Additionally, a human statue was often included alongside the stupa. The roof of the stupa was designed in a horseshoe shape, allowing light to illuminate the stupa through an opening known as the Chaitya window (Chaitya khidki). This technological development held significant importance.

- सातवाहनों के अधीन पश्चिमी भारत में पहाड़ों को काट कर अनेक स्तूप बनाये गए। उदाहरण के लिए, नासिक, भज, कन्हेरी, कार्ले, पीतलखोरा आदि।
- Under the Satavahanas, numerous stupas were constructed by cutting mountains in western India. Prominent examples include Nashik, Bhaja, Kanheri, Karle, and Pitalkhora.



# Chaitya - Ajanta Caves in cave 29





# Karle Chaitya Hall





# Bhaja, Rock-cut Chaitya Hall





# Nashik Caves





- **विहार-** अगर चैत्य बौद्धों का पूजागृह था, तो विहार भिक्षुओं का निवास स्थल। जहाँ-जहाँ चैत्यों का निर्माण हुआ, वहाँ निवास स्थल के रूप में विहारों का भी निर्माण हुआ। विहार भी पत्थरों को काटकर निर्मित किए गए थे, किंतु मौर्यकालीन गुफा वास्तुकला की तुलना में ये कहीं अधिक विकसित थे। इन विहारों में बरामदों के साथ-साथ कई कमरों का भी निर्माण किया जाने लगा।

➤ **Vihara** – The Chaitya served as the place of worship for Buddhists, while the Vihara served as the dwelling place for monks. Whenever Chaityas were constructed, Viharas were also built as residential structures. Viharas were crafted by excavating stones and exhibited a higher level of sophistication compared to Mauryan cave architecture. In addition to the verandahs(Porch), these Viharas encompassed multiple rooms within their premises.



# Ellora Cave 21, Ramesvara



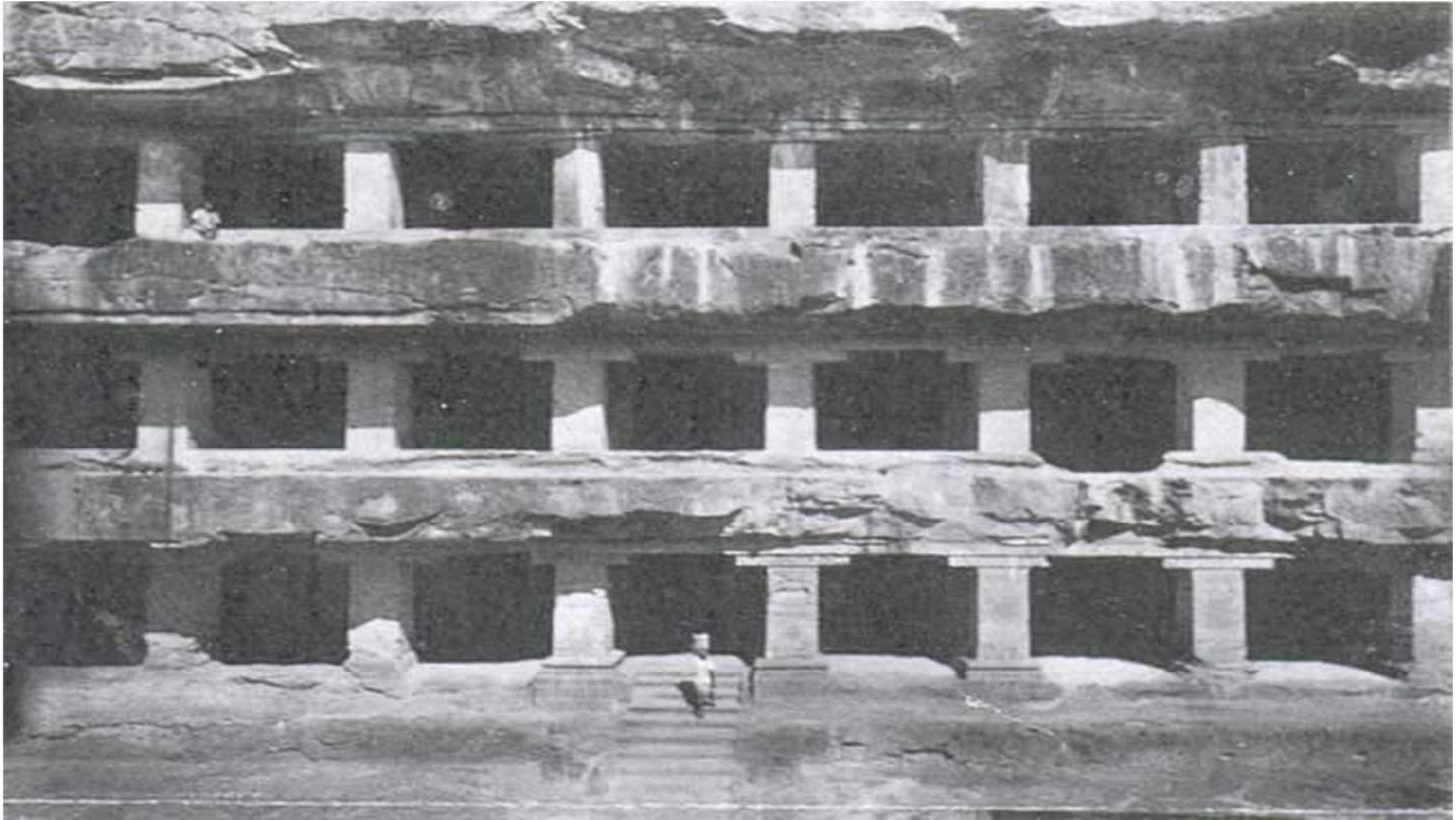


# Nasik rock cut Vihara





## Three-storied Vihara, Ellora



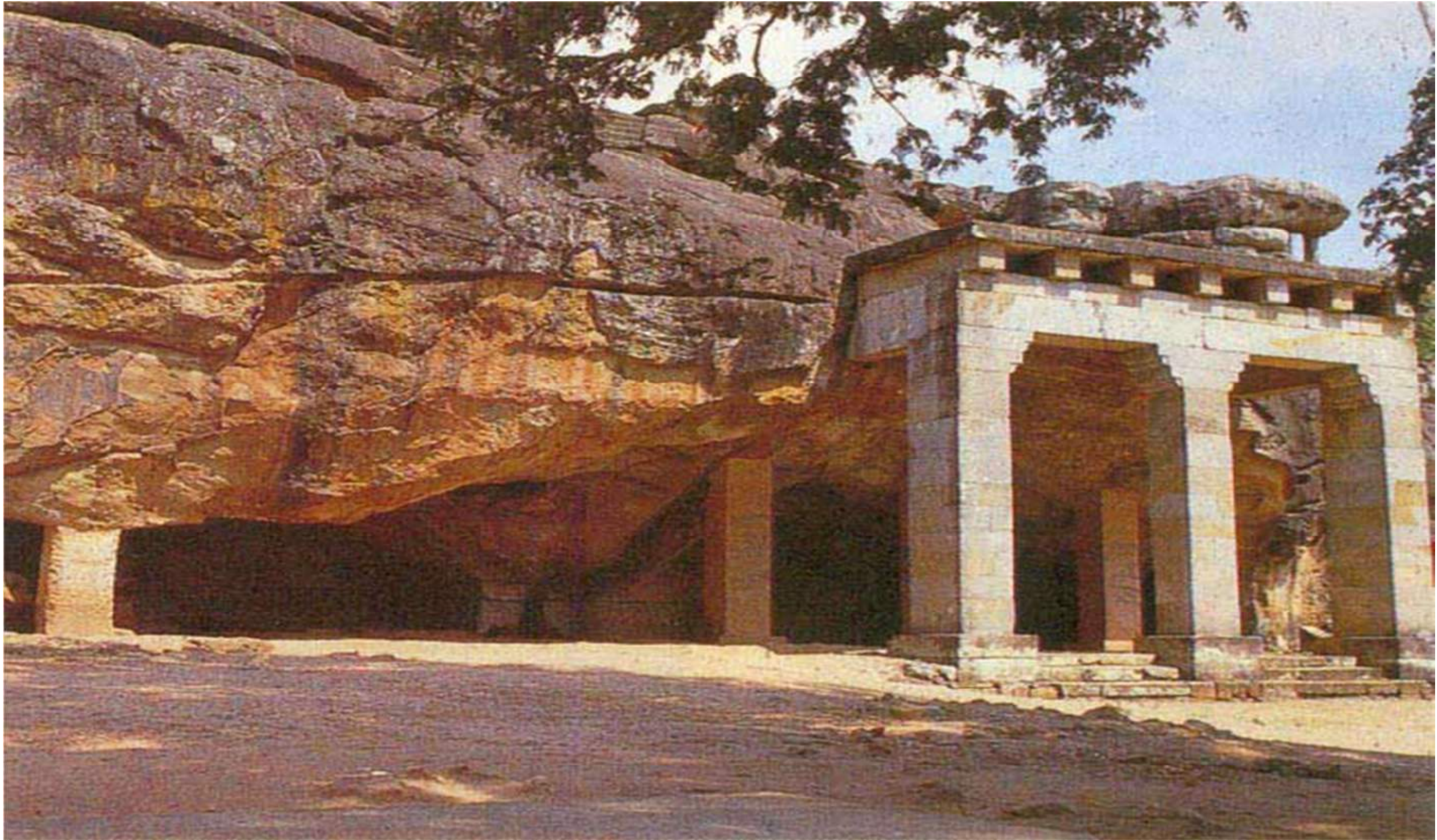


# Kanheri Caves





# Khandagiri, Hathi Gumpha





# Rani Gumpha





## Cave 19, Ajanta





## ❑ गुप्तकालीन स्थापत्य

- गुप्तकाल में कला और साहित्य ने क्लासिकल मानदण्ड स्थापित कर लिया था। इस उत्कृष्ट सौंदर्य बोध के असाधारण प्रतिमान के कारण ही इसे 'स्वर्ण युग' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। गुप्त कला को मूल उत्प्रेरणा ब्राह्मण पंथ से मिली। यद्यपि इस पर अन्य पंथों का प्रभाव भी बना रहा।
- धार्मिक स्थापत्य : इस काल में धार्मिक स्थापत्य दो रूपों में दिखाई पड़ता है—
  1. गुफा मंदिर तथा
  2. इमारती मंदिर

## ❑ Gupta Architecture

- During the Gupta period, art and literature established classical norms, earning the era the epithet of the 'Golden Age' due to its exceptional aesthetic sense. Gupta art drew inspiration primarily from the Brahmin cult, while also incorporating influences from other sects.
- ❖ Religious Architecture: During this period, religious architecture is visible in two forms: (a) Cave Temples (b) Independent Temples.



- **गुफा मंदिर :** इस काल का गुफा स्थापत्य पूर्ण रूप से बौद्ध स्थापत्य कहा जा सकता है। इसके केवल कुछ अपवाद हैं। उदाहरण के लिए, उदयगिरि में एक ब्राह्मणवादी गुफा में एक अभिलेख है जो चन्द्रगुप्त द्वितीय के राज्यकाल का है। यहाँ विष्णु की वराह प्रतिमा सर्वोत्कृष्ट रचना है जो अवतारवाद की पूर्ण अभिव्यक्ति है।

➤ **Cave Temples:** The cave architecture of this period is predominantly characterized as Buddhist architecture, with only a few exceptions. One such exception is a Brahmanical cave at Udayagiri, which bears an inscription dating back to the reign of Chandragupta II. Notably, the Varaha statue of Vishnu in this cave stands as an exceptional creation, exemplifying the concept of Avatarism.



- विष्णु के साथ यहाँ शैव और जैन धर्म से भी संबंधित गुफाएँ हैं। उदयगिरि, गुफा मंदिर एवं स्वतंत्र रूप से बने मंदिर के बीच संक्रमण की अवस्था को दर्शाता है। इसके अलावा, इस काल में अजंता और बाघ की गुफाएँ सबसे प्रसिद्ध कही जा सकती हैं जो कि बौद्ध धर्म से सम्बद्ध हैं।

- In addition to Vishnu, there are also caves associated with Shaivism and Jainism. Udayagiri marks a transitional stage between cave temples and Independent temples. Furthermore, the caves of Ajanta and Bagh, renowned for their association with Buddhism, can be considered among the most famous examples from this period.



# Varah Temple, Udaygiri





# Varah Temple, Udaygiri





- **इमारती मंदिर :** गुप्तकाल भारतीय मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण समय का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि, इस काल में मंदिर स्थापत्य अपनी शैशवास्था में था, किंतु इसमें एक विकासक्रम भी दृष्टिगोचर है। इस काल का सबसे आरम्भिक उदाहरण साँची का मंदिर संख्या-17 है। इसके साथ ही इस समय तिगवा का विष्णु मंदिर, भूमरा और खोह का शिव मंदिर, नचनाकुठार का पार्वती मंदिर, दह पर्वतिया मंदिर (असम) तथा देवगढ़ का दशावतार मंदिर प्रमुख हैं। देवगढ़ का दशावतार मंदिर, पंचायतन शैली का प्राचीनतम उदाहरण है।

➤ **Independent Temple:** The Gupta period holds immense significance in Indian temple architecture. It marks a crucial phase of evolution, despite being in its early stages. The Sanchi temple number 17 stands as the earliest example from this period. Alongside, we find prominent temples like the Vishnu temple of Tigawa, the Shiva temples of Bhumra and Khoh, the Parvati temple of Nachna Kuthara, the Dah Parvatiya temple in Assam, and the Dashavatara temple of Deogarh. Notably, the Dashavatara temple of Deogarh is the oldest example of the Panchayatan style.



- मंदिर स्थापत्य के ये सभी उदाहरण प्रस्तर निर्मित हैं। इन पत्थर के बने मंदिरों के साथ-साथ ईंट से बने मंदिर भी इस काल में बड़ी संख्या में बनाए गए। इनमें प्रमुख मंदिर भीतरगाँव (कानपुर), पहाड़पुर (बांग्लादेश) और सिरपुर (छत्तीसगढ़) में अवस्थित हैं।
- These temples are primarily crafted from stone. Additionally, a significant number of brick temples were constructed during this era. Noteworthy examples include the temples in Bhitargaon (Kanpur), Paharpur (Bangladesh), and Sirpur (Chhattisgarh).



# Sanchi Temple





# Dasavtara Temple





# Parvati Temple-Nachana Kuthara





# ***Bhitargaon Brick Temple***





# Mundeshwari Temple: Kaimur, Bihar





- **स्तूप, चैत्य एवं विहार** - मंदिरों के अतिरिक्त इस काल में स्तूपों, चैत्यों व विहारों का भी निर्माण हुआ। इस काल में जो बौद्ध स्तूप, चैत्य और विहार बनाए गए उनके प्रमुख उदाहरण जौलिया, चारसदा तथा गांधार के तक्षशिला में पाये जाते हैं। पूर्वी भारत में सारनाथ में स्थित धमेख स्तूप इस काल में विस्तृत किया गया, जो कि आकार में ढोलाकार है।

➤ **Stupas, Chaityas and Viharas** - Apart from temples, the Gupta period also witnessed the construction of stupas, chaityas, and viharas. These Buddhist structures were built in various places, with notable examples found in Jauliya, Charsadda, and Taxila of Gandhara. An elaboration of this period can be seen in the Dhamekh Stupa located in Sarnath, eastern India, which is in a drum-shaped form.



# Dhamekh Stupa : Sarnath





## ❑ गुप्तोत्तर काल

### ■ पल्लव एवं चालुक्य कालीन स्थापत्य

यह काल दक्षिण भारत में व्यापक निर्माण का काल है क्योंकि पल्लव एवं चालुक्य के अधीन महत्वपूर्ण स्थापत्यों का निर्माण हुआ।

### ■ पल्लवकालीन मंदिर निर्माण-

पल्लव शासकों ने पहाड़ों को काटकर मंदिरों का निर्माण आरंभ किया। पल्लवों के अधीन दो प्रकार के मंदिर देखने को मिलते हैं- एकाक्षम मंदिर (पहाड़ों को काटकर बनाए गए मंदिर) तथा इमारती मंदिर (स्वतंत्र रूप से बनाए गए मंदिर)।

## ❑ Post-Gupta period

### ■ Architecture of Pallava and Chalukya period

This period witnessed extensive construction in South India, with the Pallavas and Chalukyas playing a crucial role in building significant structures.

### ■ Pallava period Temple construction-

The Pallava rulers initiated the construction of temples through mountain carving. Under the Pallavas, two distinct types of temples emerged: monolithic temples, which were built by excavating mountains, and independent temples, which were built separately.



- **एकाश्म मंदिर** – पहाड़ों को काटकर बनाए गए मंदिर के उदाहरण महेन्द्रवर्मन शैली तथा नरसिंह वर्मन शैली के मंदिरों में देखने को मिलते हैं।
- **महेन्द्रवर्मन शैली** – महेन्द्रवर्मन शैली में मंडप शैली की प्रधानता है। मंडप से आशय है स्तंभों पर टिका हुआ एक हॉल जो गर्भ गृह के सामने निर्मित किया जाता था, जिसमें संगीत, नृत्य, संकीर्तन तथा अन्य प्रकार के अनुष्ठान किए जा सकते थे।

- **Monolithic Temples** - Examples of temples constructed by carving mountains can be observed in the architectural styles of Mahendravarman and Narasimha Varman.
- **Mahendravarman style** – The Mahendravarman style of temple architecture prominently features the Mandap style. A Mandapa refers to a pillared hall constructed in front of the sanctum-sanctorum. It served as a space where music, dance, Sankirtana, and other rituals could be performed.



- **नरसिंहवर्मन शैली** – इस शैली में भी मंडप प्रकार के मंदिर बनते रहे थे। उदाहरण के लिए, महिष मंदिर, वराह मंदिर तथा पंच पांडव के मंदिर। फिर भी नरसिंहवर्मन शैली में एक महत्वपूर्ण कलात्मक विकास देखने को मिलता है- रथ शैली के मंदिरों का निर्माण। यह लकड़ी के रथ की अनुकृति है और इसे पहाड़ से अलग करके तथा तराशकर बनाया गया है। इसके काल में महाबलीपुरम् में कुल 8 रथों का निर्माण किया गया जिसमें सबसे बड़ा रथ युधिष्ठिर रथ है तथा सबसे छोटा द्रौपदी रथ।

- **Narasimhavarman style** – Mandapa-style temples were also constructed within this architectural tradition. Notable examples include the Mahisha Temple, Varaha Temple, and the temples dedicated to the Pancha Pandavas. However, a significant artistic evolution can be observed in the Narasimhavarman style, which introduced the concept of chariot-style temples. These temples are designed to resemble wooden chariots and are carved from the mountain and built separately. During Narasimhavarman's reign, a total of eight chariot-style temples were built in Mahabalipuram, with the largest being the Yudhishtir chariot and the smallest being the Draupadi chariot.



- **राजसिंह शैली** – इस काल में भी पहाड़ों को काटकर मंदिर बनाए जाते रहे थे। उदाहरण के लिए, काँचीपुरम् का कैलाश नाथ मंदिर, परंतु इस शैली में पहली बार स्वतंत्र रूप से बनाए गए मंदिर के विकास तक हमें पल्लव कालीन स्थापत्य में द्रविड़ स्थापत्य शैली की लगभग सभी आधारभूत विशेषताएँ विकसित होती दिखती हैं; यथा – स्तम्भ एवं मंडप का निर्माण खंडीय शिखर, स्तूपिका आदि।

- **Rajsingh Style** - In the Mahendravarman style, Mandap-type temples were also constructed. Examples include the Mahisha Temple, Varaha Temple, and Pancha Pandava Temple. However, a significant artistic development can be observed in the Narasimhavarman style, which involves the construction of chariot-style temples. These temples resemble wooden chariots and are carved out of mountains. During this period, a total of eight chariots were built in Mahabalipuram, with the largest one known as Yudhishtira Rath and the smallest one as Draupadi Rath.



- नंदिवर्मन या अपराजित शैली – इस शैली का विकास नंदिवर्मन से लेकर अपराजित के काल तक देखा जाता है। इस समय के पल्लव स्थापत्य में ओज की कमी देखी जाती है जो उनके द्वारा लगातार युद्धों में सलग्न रहने तथा पल्लव अर्थव्यवस्था में आयी गिरावट को इंगित करता है।

- **Nandivarman or Aparajita style – The evolution of this architectural style can be traced from the era of Nandivarman to Aparajita. During this period, a noticeable decline was evident in Pallava architecture, which can be attributed to their sustained involvement in warfare and the economic decline of the Pallava civilization.**



## ❑ चालुक्य कालीन स्थापत्य -

इस काल में भी हमें गुफा मंदिर के साक्ष्य मिलते हैं। चालुक्यों के अधीन निर्माण कार्य के तीन महत्वपूर्ण केंद्र थे- एहोल, बादामी एवं पट्टादकल। एहोल में लगभग 70 मंदिरों का निर्माण दिखता है, जबकि पट्टादकल में 10 मंदिरों का। पट्टादकल के मंदिर में विरूपाक्ष एवं पापनाथ के मंदिर महत्वपूर्ण हैं। विरूपाक्ष मंदिर द्रविड़ शैली में निर्मित है, जबकि पापनाथ मंदिर पर द्रविड़ शैली के साथ-साथ नागर शैली का भी प्रभाव देखा जा सकता है।

## ❑ Chalukya period architecture -

During this period, the existence of cave temples is also evident. Aihole, Badami, and Pattadakal emerged as significant centers for construction work under the Chalukyas. Aihole witnessed the construction of approximately 70 temples, while Pattadakal saw the creation of 10 temples. Notably, the Virupaksha and Papanath temples hold prominence among the temples of Pattadakal. The Virupaksha temple showcases the Dravidian architectural style, whereas the Paapnath temple demonstrates a blend of the Nagara and Dravidian styles.



चालुक्यों के अधीन द्रविड़ एवं नागर शैली, दोनों में मंदिरों का निर्माण होता रहा, फिर दोनों को मिलाकर आगे वेसर शैली विकसित हुई।

**Under the patronage of the Chalukyas, temple construction flourished in both the Dravida and Nagara styles. Furthermore, a unique style called Vesar emerged, combining elements from both these architectural styles.**







## ❑ पूर्व मध्यकालीन स्थापत्य

- पूर्व मध्ययुग में कला और स्थापत्य के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण विकास हुए। इस समय उत्तर भारत में कश्मीर, राजस्थान तथा ओडिशा सहित अन्य क्षेत्रों में स्थापत्य और मूर्तिकला की विशिष्ट क्षेत्रीय शैलियाँ विकसित हुईं। इसके साथ ही प्रायद्वीपीय भारत में राष्ट्रकूट, चालुक्य, पल्लव तथा चोलों के अधीन भी विशाल स्तर पर निर्माण कार्य किए गए।

## ❑ Early Medieval Architecture

- The early medieval period witnessed significant developments in the fields of art and architecture. During this time, distinct regional styles of architecture and sculpture emerged in North India, including Kashmir, Rajasthan, and Odisha. Additionally, large-scale temple construction was undertaken in peninsular India under the Rashtrakutas, Chalukyas, Pallavas, and Cholas.



- पूर्व मध्यकाल तक भारत में मंदिर स्थापत्य निर्माण की तीन स्वतंत्र शैलियों का वर्णन मिलता है- **नागर, द्रविड़ तथा वेसर शैली**। नागर शैली का क्षेत्र कश्मीर से लेकर विंध्य तक फैला है। वहीं कृष्णा तथा कावेरी नदियों के बीच की भूमि द्रविड़ शैली की उत्कर्ष भूमि है, जबकि वेसर शैली का क्षेत्र विंध्य से कृष्णा नदी के बीच का है। तीनों शैलियों की विशेषताएँ निम्नवत् हैं-

- Until the early medieval period, India recognized three independent styles of temple architecture: Nagara, Dravida, and Vesara. The Nagara style spanned from Kashmir to the Vindhyas. The Dravidian style flourished in the region between the Krishna and Kaveri rivers. The Vesara style, on the other hand, encompassed the area between the Vindhya and Krishna rivers. Each style possessed unique characteristics as follows-

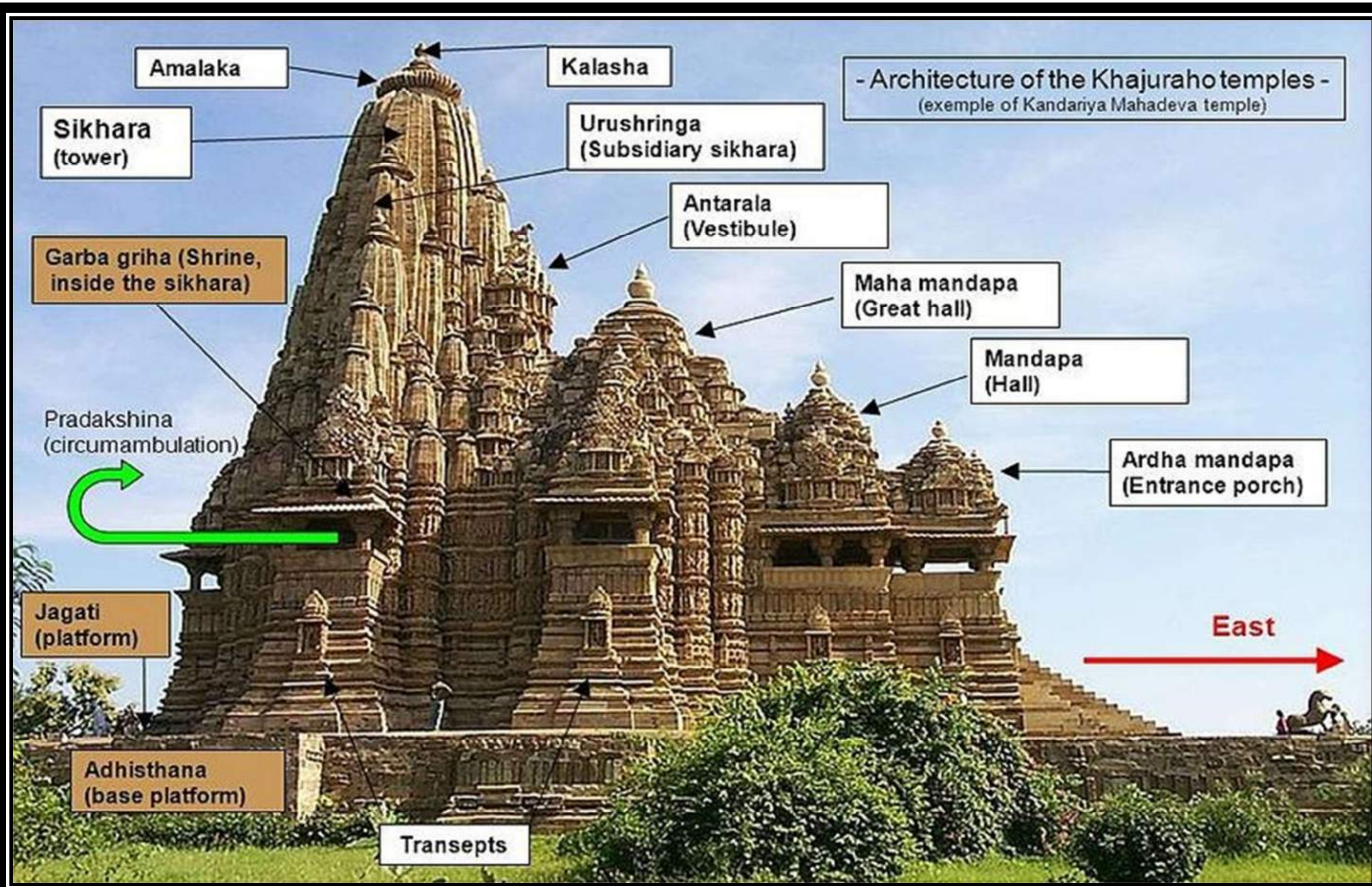


नागर शैली	द्रविड़ शैली	वेसर शैली
1. नागर शैली के मंदिर की आधारभूत योजना वर्गाकार होती है जिसे एक ऊँचे चबूतरे पर बनाया जाता था।	1. द्रविड़ शैली के मंदिरों की सबसे बड़ी विशेषता इनके पिरामिडीय शिखर हैं, जिनका उत्थान उत्तरोत्तर छोटी मंजिलों के रूप में होता है।	1. वेसर शैली एक संकर शैली है। 'वेसर' का शाब्दिक अर्थ खच्चर होता है, इसमें उत्तर तथा दक्षिण दोनों शैलियों के तत्व लिए गए हैं।
2. मंदिर का उत्थान इसके उत्तल शिखर से रेखांकित होता है।	2. शिखर के ऊपर स्तूपिका बनी होती है।	2. इसमें छत विहीन प्रदक्षिणापथ का विधान मिलता है।
3. शिखर के ऊपर आमलक बनाया जाता और उसके ऊपर कलश।	3. मंदिर के चारों ओर प्राचीर के मध्य तोरण द्वार का निर्माण, जिसे गोपुरम कहा जाता है।	3. मंदिर की दीवारों पर रथ का नियोजन दिखाई देता है।
4. विकसित मंदिरों में मुख्य शिखर के अतिरिक्त सजावट के लिए गौण शिखर का भी निर्माण किया जाता, जिन्हें उरूश्रृंग कहा जाता था।	4. मंदिर के परिसर में अनेक मंडपों का निर्माण।	4. इसमें अलंकरण के लिए नागर तथा द्रविड़ शैली की विशेषताओं का उपयोग किया जाता है।



<b>Nagara Style</b>	<b>Dravida Style</b>	<b>Vesara Style</b>
1. The Nagara style of temple architecture is characterized by a foundational plan that is square in shape. These temples were constructed on elevated platforms.	1. The prominent feature of the Dravidian style temple is its pyramidal shikhara. The shikhara gradually ascends in the form of smaller stories.	1. The Vesara style is a hybrid style, with its literal meaning incorporates features from both the northern & southern architectural elements.
2. The elevation of the temple is marked by its convex sikhara.	2. A Stupika is placed on the top of the sikhara.	2. The temple features an open circumambulatory path.
3. Amlaka is placed on top of the sikhara.	3. A gopuram has been constructed in the middle of the outer wall that surrounds the temple.	3. The temple walls are adorned with carvings of Rathas (chariots).
4. In developed temples, secondary sikhara, known as Urushringa, were constructed alongside the main sikhara	4. Multiple mandapas (pavilions) were built within the temple premises.	4. The temples incorporated elements of both Nagara and Dravida styles for decorative purposes.





**NAGARA  
ART**

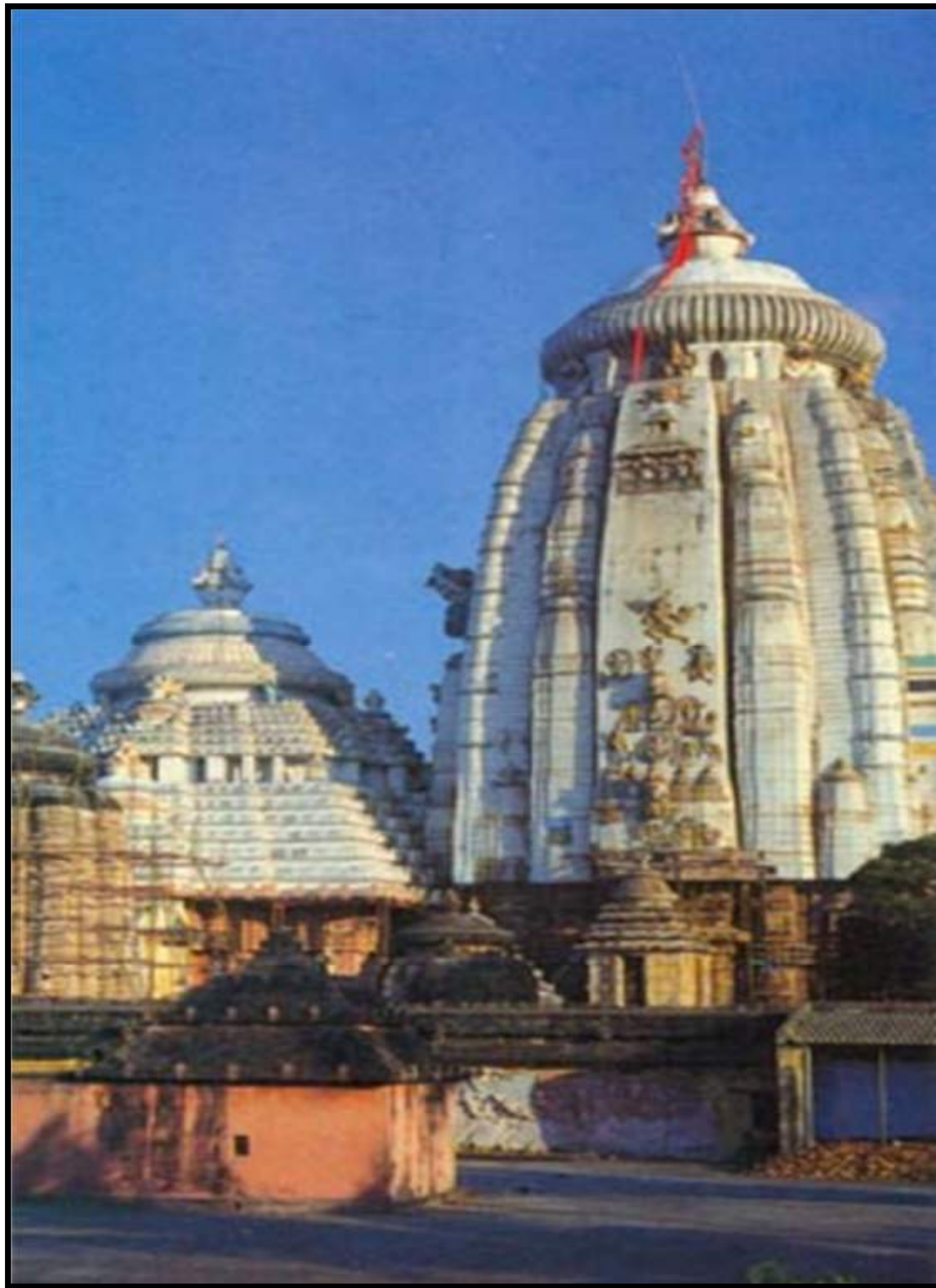


# Lingaraj Temple, Bhuvaneshwar





# Jagannath Temple, Puri





# Mukteshwar Temple, Bhuwaneshwar





# Khajuraho Temple



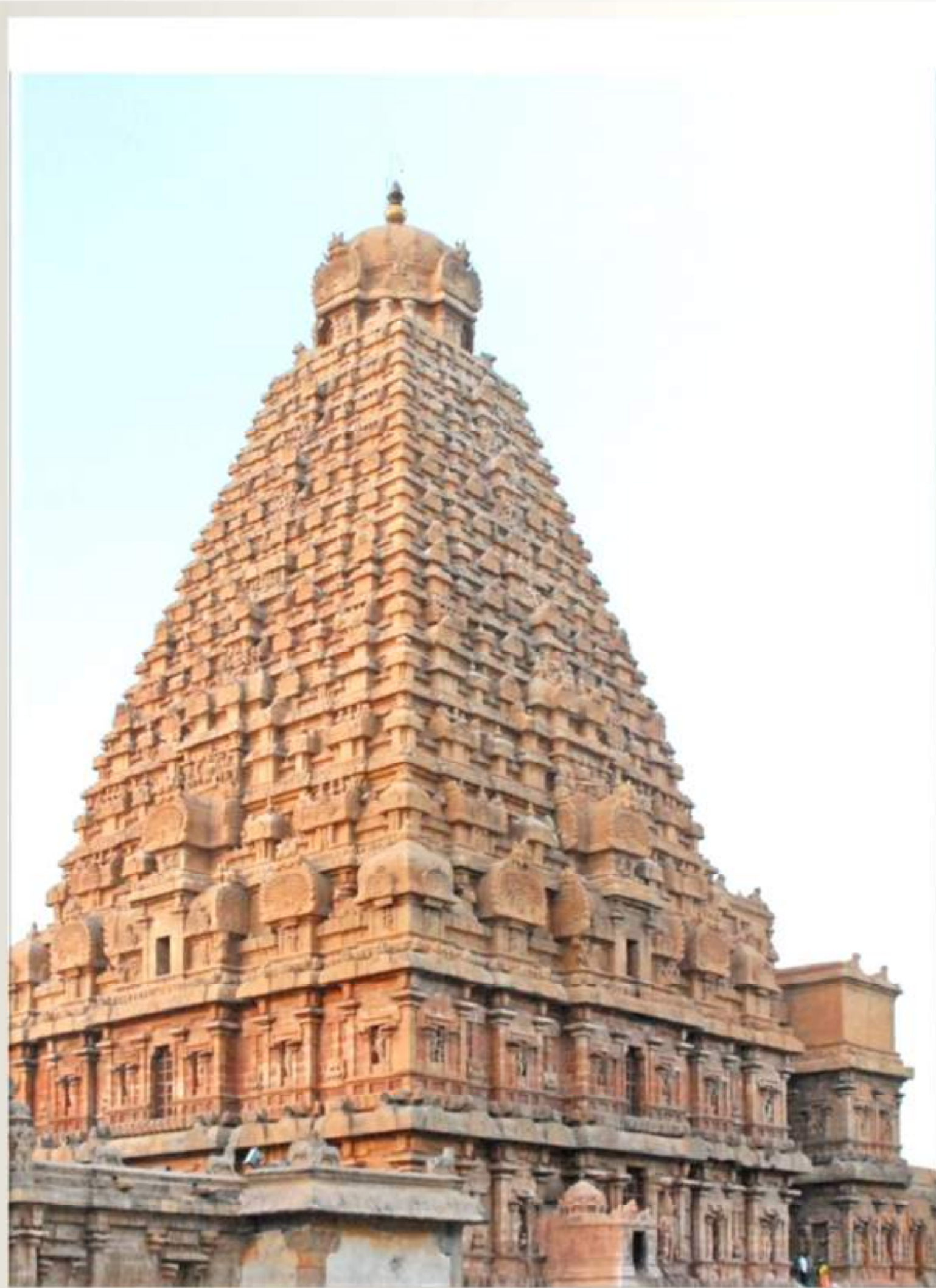


# Sadashiva Temple





# Brihadeshvara Temple of Tanjavur





# Papanath Temple





# Dodda Basappa Temple





# Gangai Konda Cholapuram





# Darasuram Airavatesvara Temple





# Halebid- Hoysaleswara Temple





# Kasivisvesvara Temple, Lakkundi





# Kedareshvara Temple, Balligavi





# Muttaraiyar temple





❑ **राष्ट्रकूटकालीन स्थापत्य कला :** राष्ट्रकूट शासक शैवमतानुयायी थे, अतः उनके काल में शैव मंदिर एवं मूर्तियों का ही निर्माण प्रधान रूप से हुआ। एलोरा, एलीफैंटा, जागेश्वरी, मण्डपेश्वर जैसे स्थान कलाकृतियों के निर्माण के प्रसिद्ध केन्द्र थे। इनमें एलोरा तथा एलीफैंटा विशेष उल्लेखनीय हैं।

❑ **Rashtrakuta Period Architecture: -** The Rashtrakuta rulers were devout followers of Shaivism, which resulted in the construction of numerous Shiva temples and idols during their reign. Centers such as Ellora, Elephanta, Jageshwari, and Mandapeshwar gained fame for their remarkable architectural prowess. Among these centers, Ellora and Elephanta stand prominent.



- **एलोरा :** एलोरा का स्थापत्य ब्राह्मण, जैन तथा बौद्ध तीनों धर्मों से संबंधित है। उत्कृष्ट बौद्ध एवं जैन गुफाओं के अतिरिक्त एलोरा गुफाओं को भव्य कैलाशनाथ मंदिर के कारण भी जाना जाता है। एलोरा के **कैलाशनाथ मंदिर** के प्रतिमा शास्त्रीय निरूपण में शिव, शिव-पार्वती, कैलाश पर्वत को हिलाता रावण, दुर्गा, विष्णु, सप्तमातृकाएँ, गंगा, गणेश, यमुना तथा सरस्वती देवियों को भी स्थान मिलता है। वस्तुतः कैलाश मंदिर को उपमहाद्वीप के गुफा स्थापत्य का चरमोत्कर्ष कहा जाता है।

- **Ellora:** The architecture of Ellora encompasses the three major religions of Brahmin, Jain, and Buddhist. It is renowned for its impressive Buddhist and Jain caves, as well as the magnificent Kailashnath temple. The Kailashnath temple at Ellora features intricate iconography, including depictions of Shiva, Shiva-Parvati, Ravana shaking Mount Kailasha, Durga, Vishnu, Saptamatrikas, Ganga, Ganesha, Yamuna, and Saraswati goddesses. This temple is considered the pinnacle of cave architecture in the Indian subcontinent.



- **एलीफैंटा** : एलीफैंटा में सर्वाधिक सुन्दर प्रतिमा महेश की है।
- **Elephanta**: The most beautiful statue in Elephanta cave is of Mahesha(God Shiva).



# Kailāsa temple, Ellora Caves





## Kailāsa temple, Ellora Caves





❑ **चालुक्यकालीन स्थापत्य कला :** दक्कन में, कर्नाटक के कई स्थानों पर मंदिरों के गुफा स्थापत्य और स्वतंत्र संरचनाओं के पूर्व मध्ययुगीन उदाहरण मिलते हैं। बादामी और एहोल, प्रारम्भिक स्थापत्य काल ( 6वीं से 8वीं सदी के शुरूआती वर्ष ) का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्थापत्य काल में दूसरे और अपेक्षाकृत भव्य चरण का प्रतिनिधित्व 8वीं सदी में पट्टदकल में बने मंदिरों के द्वारा होता है। चालुक्यों के मंदिर स्थापत्य में उत्तर और दक्षिण दोनों की स्थापत्य विशिष्टताएँ दिखलाई पड़ती हैं, किंतु इन शताब्दियों में दक्कन के स्थापत्य का अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी तैयार हो गया।

❑ **Chalukya Architecture:** In the Deccan region, there are numerous examples of early medieval temple cave architecture and independent architecture, particularly in Karnataka. The towns of Badami and Aihole showcase the architectural style of the early period, spanning from the 6th to the early 8th century AD. The second phase of architectural development, which is more grand in nature, is evident in the temples constructed at Pattadakal during the 8th century. The Chalukya dynasty's temple architecture exhibits a blend of architectural characteristics from both the northern and southern regions. However, during this time, the Deccan region's architecture also established its own unique identity.



- **एहोल** - एहोल में दो प्रभावशाली गुफा मंदिर विद्यमान हैं- एक जैन तथा दूसरा, शैव और दोनों की अंतः दीवारें अत्यधिक अलंकृत हैं।
- **बादामी** - बादामी की गुफाएँ लाल बलुआ पत्थर को काटकर बनाई गई हैं। यहाँ तीन प्रमुख गुफाओं में सबसे बड़ी गुफा वैष्णव है, जबकि एक शैव एवं दूसरी जैन है।
- **पट्टदकल** - पट्टदकल में दस मंदिर प्राप्त होते हैं, जिनमें विरूपाक्ष का मंदिर सर्वाधिक सुंदर तथा आकर्षक है। यह शिव को समर्पित है तथा इसका निर्माण लोकमहादेवी ने करवाया था।
- **Aihole:** Aihole has two remarkable cave temples, one dedicated to Jainism and the other to Shaivism. Both caves feature intricately adorned inner walls.
- **Badami:** The caves of Badami are carved out of red sandstone. Among the three major caves, one is dedicated to Vaishnavism, another to Shaivism, and the third one for Jainism.
- **Pattadakal:** Pattadakal is home to ten temples, with the Virupaksha Temple being the most exquisite and captivating. Dedicated to Shiva, it was constructed by Lokmahadevi.



# Aihole, Durgi temple





# Aihole, Temple





# Aihole temple



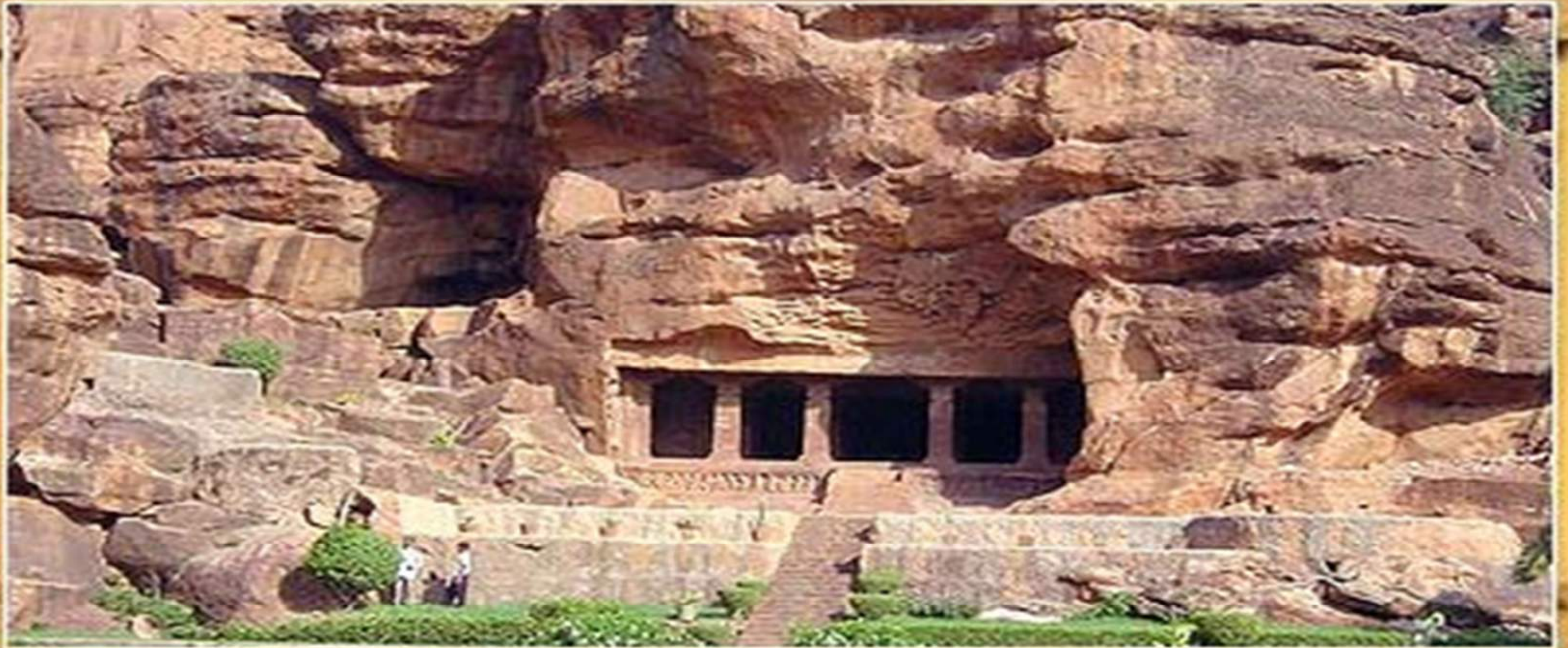


# Badami malegitti-Sivalaya temple





# Heritage Site of Badami Caves



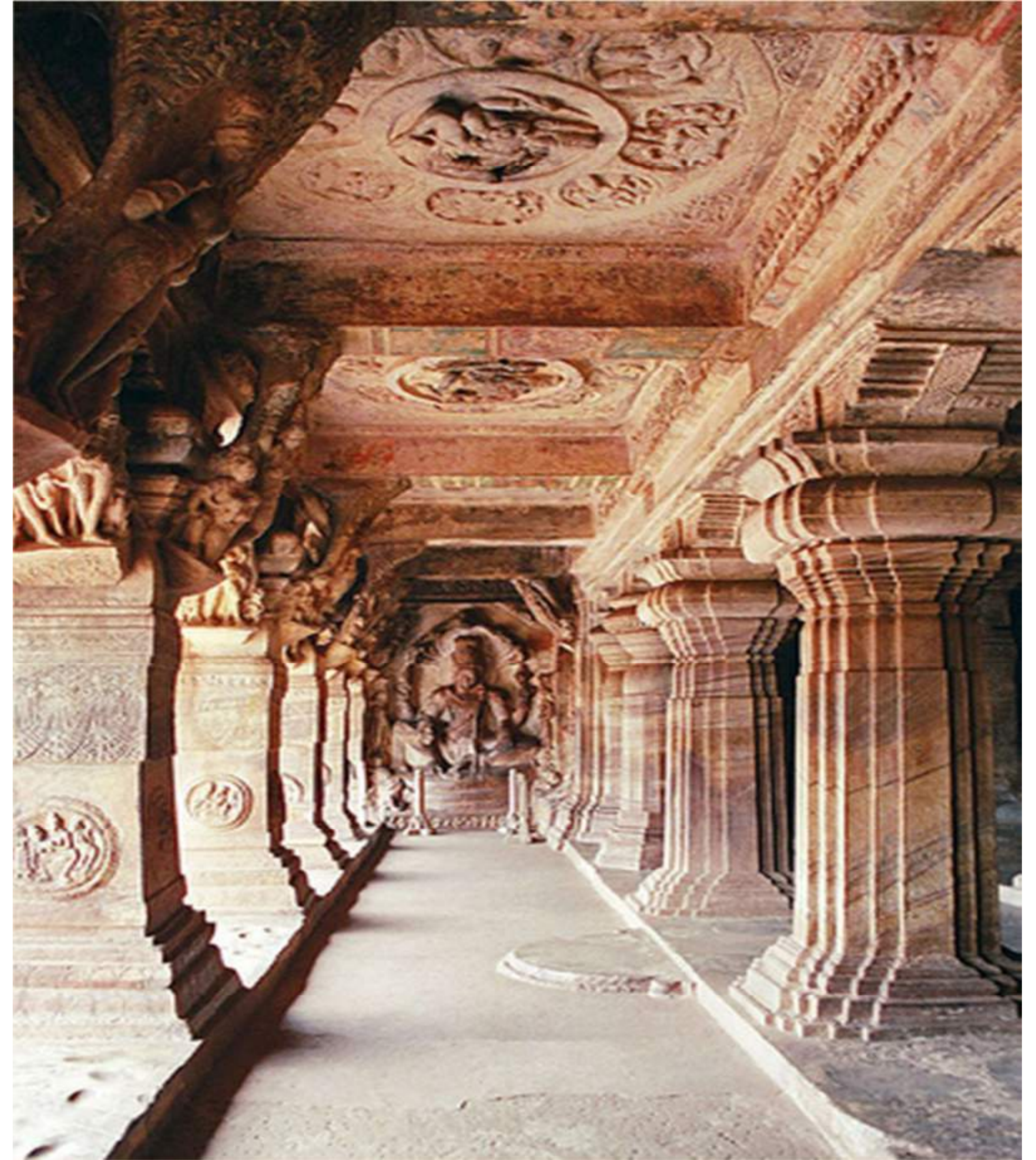


# Badami cave Dancing Shiva





# Badami - The Halls of Lord Vishnu





# Cave temple Badami





# Cave temple Badami 2





# Pattadakal- Virupaksha temple





# Pattadakal- Papanath Temple





# Pattadakal - Nataraja on temple





❑ **होयसल स्थापत्य :** दक्कन में मंदिर स्थापत्य का दूसरा महत्वपूर्ण चरण होयसल राजवंश से जुड़ा है, जिन्होंने दक्षिणी कर्नाटक में अपनी राजधानी द्वारसमुद्र से शासन किया। इस काल के मंदिरों के अवशेष हेलबिड, बेलूर तथा सोमनाथपुर से मिले हैं। इनमें सबसे भव्य मंदिर 12वीं सदी में हेलबिड में बना होयसलेश्वर मंदिर है, जबकि बेलूर स्थित केशव मंदिर एक विशाल आँगन में बने अनेक मण्डपों का समुच्चय है। सोमनाथपुर में 13वीं सदी का केशव मंदिर, होयसल कालीन मंदिर स्थापत्य और मूर्तिकला का चरम बिन्दु कहा जा सकता है।

❑ **Hoysala Architecture:** The Hoysala dynasty, ruling from Dwarasamudra in southern Karnataka, witnessed the second significant phase of temple architecture. Prominent temples from this period can be found in Halebid, Belur, and Somnathpur. The Hoysaleswara Temple in Halebid, dating back to the 12th century, is the grandest, while the Kesava Temple in Belur consists of pavilions(Mandapa) within a spacious courtyard. The Keshava Temple in Somnathpur, constructed in the 13th century, is regarded as the pinnacle of Hoysala temple architecture and sculpture.



# Halebid- Hoysaleswara Temple





# Chennakeshava Temple, Somanathapura





# Chennakeshava Temple, Belur





❑ **पल्लव स्थापत्य** : दक्षिण भारत में प्रस्तरीय स्थापत्य का इतिहास 7वीं शताब्दी में भक्ति की बढ़ती लोकप्रियता से जुड़ा हुआ था। पल्लव वास्तुकला ही दक्षिण की द्रविड़ कला शैली का आधार बनी। उसी से दक्षिण भारतीय स्थापत्य के तीन प्रमुख अंगों का जन्म हुआ-

1. मण्डप
2. रथ
3. विशाल मंदिर

- महान कलाविद् पर्सी ब्राउन ने पल्लव वास्तुकला के विकास की शैलियों को चार भागों में विभक्त किया है-

❑ **Pallava Architecture:-** Stone architecture in South India emerged during the 7th century with the rise of Bhakti. The Pallava architecture laid the foundation for the Dravidian style. It gave birth to three major components: **pavilion (Mandapa), chariot (Rathas), and grand temple.**

- Percy Brown, a renowned architect, divided the development of Pallava architecture into four styles.



- **महेन्द्रवर्मन शैली :** महेन्द्रवर्मन शैली में मंडप शैली की प्रधानता है। मण्डप से आशय है स्तंभों पर टिका हुआ एक हॉल, जो गर्भगृह के सामने निर्मित किया जाता था, जिसमें संगीत, नृत्य, संकीर्तन तथा अन्य प्रकार के अनुष्ठान किए जा सकते थे।
- **मामल्ल शैली :** इस शैली का विकास नरसिंहवर्मन प्रथम 'महामल्ल' के काल में हुआ। इसके अन्तर्गत दो प्रकार के स्मारक बने- मण्डप तथा एकाक्षक मंदिर ( रथ )। इस शैली में निर्मित सभी स्मारक मामल्लपुरम् में विद्यमान हैं। यहाँ मुख्य पर्वत पर दस मण्डप बनाए गए हैं जिनमें आदिवराह मण्डप, महिषमर्दिनी मण्डप तथा रामानुज मण्डप आदि विशेष प्रसिद्ध हैं।

- **Mahendravarman Style:** The Mahendravarman style predominantly features mandapas, pillared halls where music, dance, and rituals were performed.
- **Mamalla Style:** Developed during the reign of Narasimhavarman I 'Mahamalla', this style includes both mandapas and monolithic temples (raths). Mamallapuram is renowned for its monuments, including ten pavilions(Mandapa) on the main mountain, such as Adivaraha pavilion, Mahishamardini pavilion, and Ramanuja pavilion.



- मामल्लशैली की दूसरी रचना रथ अथवा एकाश्मक मंदिर हैं। यह लकड़ी के रथ की अनुकृति है और इसे पहाड़ से अलग करके तथा तराशकर बनाया गया है। महाबलीपुरम् में कुल 8 रथों का निर्माण किया गया जिसमें सबसे बड़ा रथ युधिष्ठिर रथ है तथा सबसे छोटा द्रौपदी रथ।
- The Mamalla style also incorporates monolithic temples designed to resemble wooden chariots, with Mahabalipuram having a total eight chariots, including the largest, the Yudhishtira chariot, and the smallest, the Draupadi chariot.



- **राजसिंह शैली :** इस काल में भी पहाड़ों को काटकर मंदिर बनाए जाते रहे थे। उदाहरण के लिए, काँचीपुरम् का कैलाशनाथ मंदिर, परन्तु इस शैली में पहली बार स्वतंत्र रूप से बनाए गए मंदिर का उदाहरण है- महाबलीपुरम् का तटीय मंदिर। इस मंदिर के विकास तक हमें द्रविड़ स्थापत्य शैली की लगभग सभी आधारभूत विशेषताएँ विकसित होती दिखती हैं; यथा- स्तम्भ एवं मण्डप का निर्माण, खंडीय शिखर, स्तूपिका आदि।

➤ **Rajsingh Style:** Mountain-carving techniques were employed during this period, exemplified by the Kailasanatha temple in Kanchipuram. The Shore Temple in Mahabalipuram is considered the first independent temple built in this style. It showcases several features of Dravidian architectural style, including pillar and pavilion(Mandapa) construction, segmented shikhara, and stupa elements.



- **नन्दिवर्मन शैली** : इस शैली के अन्तर्गत अपेक्षाकृत छोटे मंदिरों का निर्माण हुआ। इसके उदाहरण काँची के मुक्तेश्वर एवं मातंगेश्वर मंदिर तथा गुड्डिमल्लम् का परशुरामेश्वर मंदिर आदि हैं। शैली की दृष्टि से धर्मराज रथ की अनुकृति प्रतीत होते हैं।

➤ **Nandivarman Style:** The Nandivarman style focuses on relatively smaller temples. Examples include the Mukteshwar and Matangeshwar temples in Kanchi and the Parasurameswara temple in Gudimallam. Dharmaraja temple appears to imitate the chariot style.



# Dharmaraj Rath





# Bheem Rath





## Arjuna Rath



## Nakul Sahdev Rath





# Draupadi Rath





# Ganesha Rath



# Elephant





# Panch Ratha- Pallava Temple





**Varaha Cave  
Temple,  
Mamallapuram**



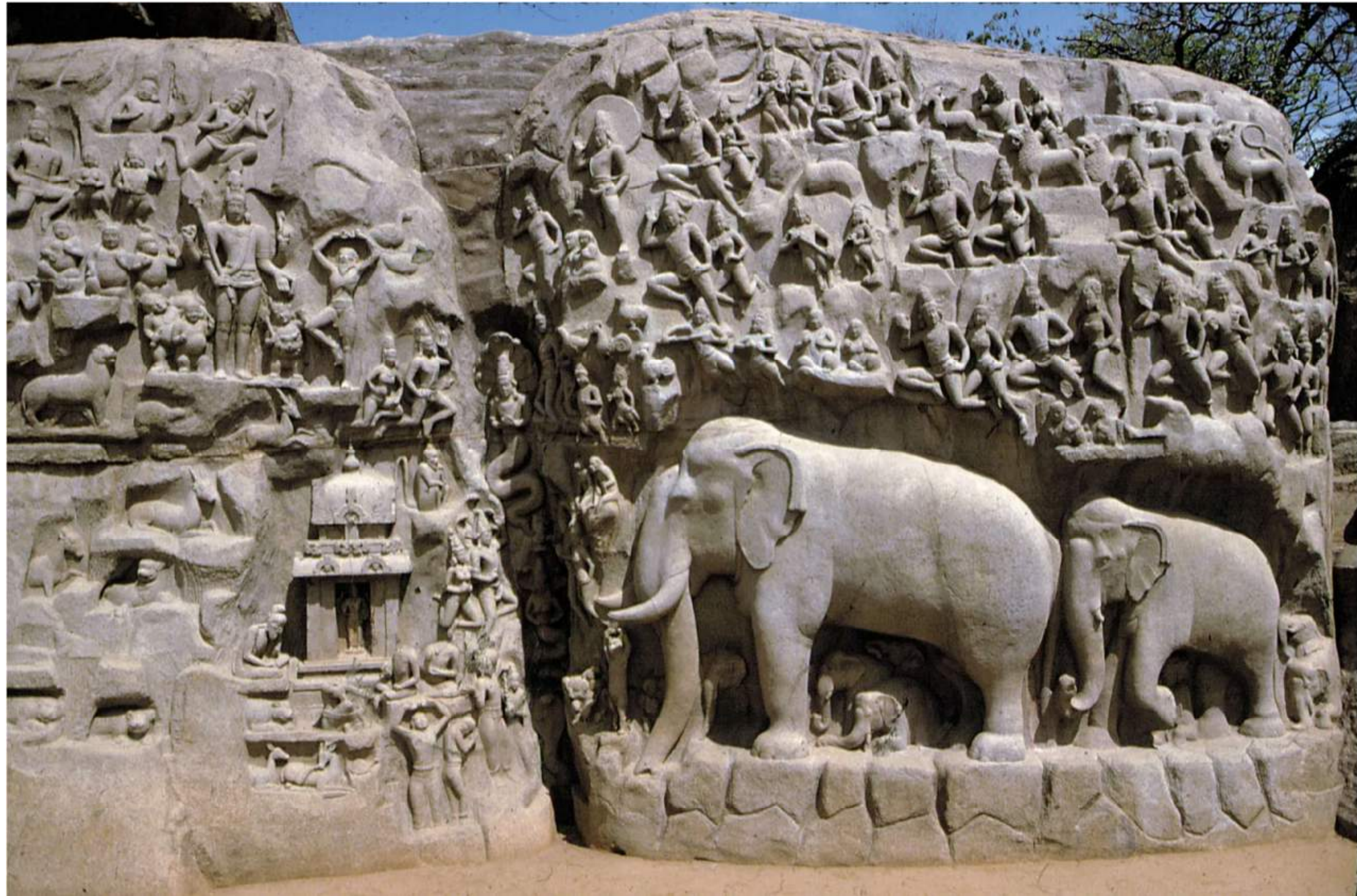


# Mahabalipuram- Shore Temple





# Arjuna Penance





# Arjuna Penance





❑ **चोल स्थापत्य :** चोलवंशीय शासक उत्साही निर्माता थे, उनके समय में कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। चोल काल दक्षिण भारतीय कला का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। चोल स्थापत्य के विकास के मुख्यतः तीन चरण दिखाई देते हैं- प्रारम्भिक काल ( 850-985 ई. ), मध्य काल ( 985-1070 ई. ) तथा उत्तरकाल ( 1070-1270 ई. )।

❑ **Chola Architecture:** During the reign of the Chola dynasty, the rulers displayed great enthusiasm for construction, leading to significant advancements in art and architecture. This era, known as the Chola period, is considered the golden age of South Indian art. The evolution of Chola architecture can be divided into three distinct phases: the early period (850-985 AD), the middle period (985-1070 AD), and the later period (1070-1270 AD).



- चोल स्थापत्य के प्राचीनतम चरण का प्रतिनिधित्व नार्त्तामलाई का शिव मंदिर करता है। इस प्रकार का दूसरा मंदिर कन्नूर का बालसुब्रह्मण्य मंदिर है जिसे आदित्य प्रथम ने बनवाया था। इसी समय का एक अन्य मंदिर कुम्बकोणम् में बना नागेश्वर मंदिर है।
- चोल मंदिर स्थापत्य का दूसरा चरण आदित्य प्रथम और परांतक प्रथम के काल को कह सकते हैं। परांतक प्रथम के काल में निर्मित श्रीनिवासनल्लूर का कोरंगनाथ मंदिर इस चरण का प्रमुख उदाहरण है।

- The earliest phase of Chola architecture is exemplified by the Shiva temple at Narattamalai. Another significant temple from this period is the Balasubramanya Temple in Kannur, built by Aditya I. Additionally, the Nageshwar temple in Kumbakonam is another notable temple belonging to this era.
- The second phase of Chola temple architecture can be attributed to the reign of Aditya I and Parantaka I. The Koranganatha temple is Srinivasanallur, constructed during the rule of Parantaka I, stands as a prime example of this phase.



- चोल मंदिर स्थापत्य का तीसरा चरण शेम्बियन महादेवी तथा राजराज प्रथम के शासन काल के शुरूआती दौर को कहा जा सकता है। इस चरण में चोल स्थापत्य कला का चरमोत्कर्ष **तंजौर के बृहदेश्वर मंदिर** में देखा जा सकता है। इसका विमान 60 मीटर लम्बा है तथा इसके शिखर अत्यंत विशाल हैं। इस शिव मंदिर को अपने काल का सबसे भव्य मंदिर कहा जा सकता है।
- चोल मंदिर स्थापत्य के अंतिम चरण में विमान की तुलना में गोपुरम् अधिक महत्वपूर्ण हो गए। इस तथ्य का अवलोकन चिदम्बरम् के शिव मंदिर में किया जा सकता है।

- The third phase of Chola temple architecture corresponds to the early period of Sembiyan Madevi and Rajaraja-I's reign. The Brihadisvara temple in Tanjore exemplifies the pinnacle of Chola architecture during this phase. With its 60-meter-long vimana and impressive Sikhara(pinnacles), this Shiva temple is considered the grandest of its time.
- In the later phase of Chola temple architecture, Gopurams (grand gateways) gained more prominence compared to the vimanas. This transition is evident in the Shiva temple at Chidambaram.



# Vijayalaya Choleswaran Temple at Narthamalai





# Brihadeshvara Temple at Tanjavur





प्रश्न- मंदिर वास्तुकला के विकास में चोल वास्तुकला का उच्च स्थान है। विवेचना कीजिए  
( UPSC-2013, 100 शब्द )

उत्तर: मंदिर वास्तुकला में द्रविड़ स्थापत्य की आधारभूत संरचना पल्लव शासकों के अधीन विकसित हुई थी, किंतु उसका स्पष्ट एवं वास्तविक रूप चोलों के काल में निखर कर आया। चोलकालीन स्थापत्य में मंडप, शिखर एवं विमान के साथ-साथ गोपुरम् का विकास भी देखा गया।

Question: Chola architecture represents a high watermark in the evolution of temple architecture. Discuss. [UPSC-2013]

Answer: The foundation of Dravidian temple architecture was laid by the Pallava rulers, but its zenith was reached during the Chola period. Chola architecture witnessed the evolution of various architectural elements, including the mandapa, shikhara, vimana, and gopuram.



मंडप का निर्माण स्तंभयुक्त हॉल के रूप में आनुष्ठानिक कार्य पूरा करने के लिए किया जाता था। उसी प्रकार, गर्भगृह के ऊपर खंडीय शिखर का निर्माण किया जाता, जो ऊपर जाते हुए उत्तरोत्तर छोटा होता जाता। उसके ऊपर स्तूपिका निर्मित की जाती। उत्तुंग शिखरों के माध्यम से चोल शासकों ने अपने राजत्व के गौरव को व्यक्त किया। गर्भगृह से लेकर स्तूपिका तक की उठानी को विमान कहा जाता था।

The mandapa, a pillared hall, served as a space for conducting rituals and ceremonies. The shikhara, a segmented tower, adorned the sanctum and gradually decreased in size as it ascended, culminating in a Stupika. These towering shikharas symbolized the magnificence of Chola kingship. The vertical structure connecting the sanctum-sanctorum to the Stupika is known as the vimana.



फिर इस काल में मंदिर के क्षैतिज विस्तार को देखते हुए ऊँचा प्रवेश द्वार बनाया जाता, जिसे गोपुरम कहा जाता। चोल शासक राजराज प्रथम के द्वारा निर्मित बृहदेश्वर मंदिर तथा राजेन्द्र प्रथम के द्वारा निर्मित गंगईकोंडचोलपुरम का मंदिर, मंदिर निर्माण कला की विकसित अवस्था को दर्शाते हैं।

**During this era, temples underwent horizontal expansion, leading to the construction of magnificent entrances called gopurams. These majestic gateways added to the splendor of the temples. The Brihadeshwara temple, commissioned by Rajaraja I, and the temple at Gangaikondacholapuram, built by Rajendra I, epitomize the advanced stage of temple architecture during the Chola reign.**



**प्रश्न-** प्राचीन काल में स्थापत्य के विकास को प्रेरित करने में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक कारकों की भूमिका को स्पष्ट कीजिये।

**उत्तर:** प्राचीन काल में स्थापत्य के निर्माण के कई चरण रहे और अंत में भौगोलिक आधार पर ये तीन शैलियों में विभाजित हो गया। यथा- नागर शैली, द्रविड़ शैली और वेसर शैली। तीनों ही शैलियों में अनेक मंदिरों का निर्माण किया गया।

**Question-** Explain the role of political, economic, social and religious factors in motivating the development of architecture in ancient times.

**Answer:** In ancient times, architecture underwent multiple phases of development, eventually leading to its classification into three distinct styles based on geography: Nagar style, Dravidian style, and Vesara style. Temples were constructed abundantly in each of these styles.



➤ प्रेरित करने वाले कारक:

■ राजनीतिक कारक-

- कई राजवंश निचली श्रेणी से आए थे। अतः अपने वंश की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिये वे ब्राह्मणों से अपना संबंध जोड़ते थे और मंदिरों को संरक्षण देते थे।
- राजवंश के धार्मिक विश्वास से भी मंदिर के निर्माण प्रभावित हुए।

**Political factors-** Political factors

played a significant role in motivating the development of ancient architecture. Many dynasties rose from lower segments of society, and to establish their dynasty's prestige, they would align themselves with Brahmins and support temple patronage. The religious beliefs of the ruling dynasty also influenced the construction of temples, as they sought to honor and worship their chosen deities.



- अपनी विजय के उपलक्ष्य में भी मंदिरों के निर्माण कराए जाते थे। उदाहरण के लिये, राजेंद्र प्रथम के द्वारा गंगईकोंड चोलपुरम् मंदिर का निर्माण।
- अतिरिक्त शक्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये तत्कालीन शासकों ने अपना संबंध देवताओं से जोड़ा। उदाहरण के लिये, चोल शासकों के द्वारा अपनी प्रतिमाएँ मंदिरों में स्थापित करवाई जाती थीं।

**Temples were often built to commemorate victorious events, symbolizing the power and influence of the ruling dynasty. For instance, Rajendra I constructed the Gangaikonda Cholapuram temple to celebrate his triumph. Rulers of the time sought to enhance their power and prestige by associating themselves closely with the deities worshiped in the temples. As a demonstration of their authority, Chola rulers even had their own images installed within the temple premises.**



- **आर्थिक कारक-** भूमि अनुदान के परिणामस्वरूप एक तरफ भूमिधारकों के वर्ग का उद्भव हुआ, वहीं दूसरी तरफ कई क्षेत्रीय राजवंश भी स्थापित हुए। इनके द्वारा मंदिरों का निर्माण करवाया गया। उसी प्रकार, व्यापारिक गतिविधियों से उत्पन्न एक संपन्न व्यापारी वर्ग ने चैत्य एवं विहारों के साथ-साथ मंदिरों का भी निर्माण करवाया।
- **सामाजिक कारक-** कुछ नवीन सामाजिक वर्गों के द्वारा अपने सामाजिक दर्जे को ऊँचा उठाने के लिये मंदिरों का निर्माण कराया गया। उदाहरण के लिये, राजपूत राजवंश द्वारा बड़े पैमाने पर मंदिरों का निर्माण कराया गया।

**Economic Factors-** Land grants gave rise to a class of landholders, alongside the establishment of regional dynasties. These dynasties, in turn, built temples. Similarly, a prosperous merchant class, fueled by commercial activities, constructed chaityas, viharas, and temples.

**Social factor-** In order to enhance their social standing, various emerging social classes took on the task of building temples. The Rajput dynasty, for example, embarked on ambitious temple construction projects on a grand scale.



- **धार्मिक कारक-** धार्मिक विश्वास से प्रेरित होकर भी मंदिरों का निर्माण कराया जाता था तथा अपने विश्वास के अनुकूल देवताओं की प्रतिमाएँ स्थापित की जाती थीं। उदाहरण के लिये, चोल शासकों ने शैव मंदिर का निर्माण करवाया, तो विजयनगर शासकों ने वैष्णव मंदिर का।

**अभ्यास प्रश्न-** शैलकृत स्थापत्य (*Rock-cut Architecture*) प्रारंभिक भारतीय कला के ज्ञान के अति महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। विवेचना कीजिए। (*UPSC-2020, 150 शब्द*)

**Religious factor-** Temples were built out of deep religious devotion, with the installation of deity idols aligned with specific beliefs. Notably, the Chola rulers erected grand Shiva temples, while the Vijayanagara rulers focused on constructing magnificent Vaishnava temples.

- **Practice Questions:** The rock-cut architecture represents one of the most important sources of our knowledge of early Indian art and history. Discuss.

[UPSC-2020, 150 words]



**END**

***Thank You!***